बाइबल के आश्चर्यकर्म

बाइबल को परमेश्वर की प्रेरणा से होने वाली पुस्तक के रूप में नकारने का एक आम बहाना यह है कि ''इसमें बहुत से चमत्कार हैं।'' इस कारण, आत्मा की प्रेरणा से होने और बाइबल के अधिकार पर हमारा अध्ययन चमत्कारों की चर्चा के बिना अधूरा होगा। पवित्र आत्मा द्वारा हिन्दी बाइबल में चमत्कार के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द ''अद्‌भुत काम, अचम्भे, सामर्थ के काम, चिह्न, भले काम, आश्चर्य के काम'' हैं। यद्यपि सामान्य प्रकृति अपने आप में अद्‌भुत है, परन्तु बाइबल के परमेश्वर द्वारा किए गए अद्‌भुत काम जो प्रकृति के नियम के बहुत कम अपवाद होते हैं, काफ़ी मात्रा में दिखाए गए हैं। केवल इन अपवादों में ही मसीही प्रमाण मिलते हैं। ये परमेश्वर के कार्य हैं जो स्पष्ट रूप से उसकी सामर्थ के सामान्य कार्य करने को अलग करते हैं। उन्हें उदाहरण देकर स्पष्टता से परिभाषित किया गया है: मूसा ने मिसर में, लाल सागर में, और जंगल में क्या किया; भयानक आग और शेरों की गुफाओं में परमेश्वर के दासों के अनुभव; यीशु का पानी को मय बनाना; उसका तुरन्त लोगों को चंगा करना और मुर्दों को जिलाना; रोटियों और मछलियों को बढ़ाना; उसके चेलों द्वारा सांपों को पकड़ना इत्यादि।

बाइबल के आश्चर्यकर्मों की वैज्ञानिक व्याख्या देने का प्रयास, या बाइबल के आश्चर्यकर्म करने वालों को मनोवैज्ञानिकों के रूप में दिखाना, हज़ारों भूखे लोगों को भोजन खिलाने या लाज़र के फिर से जीवित होने की व्याख्या करने के लिए अपर्याप्त है। यह कहना पड़ेगा कि बाइबल के आश्चर्यकर्म या तो ऐतिहासिक तथ्य हैं या कल्पित कथाएं। ईश्वरीय संदेश के रूप में प्रमाणित करने के लिए व्यावहारिक प्रभावों के अतिरिक्त बाइबल के आश्चर्यकर्मों की रूपरेखा तैयार की गई थी। मूसा, मसीह और प्रेरितों के लिए वे परमेश्वर की सिफारिशी चिट्ठियां थीं।

आश्चर्यकर्मों को नकारने का मानवीय आधार

मनोविज्ञान द्वारा आश्चर्यकर्मों की व्याख्या के लिए जबरदस्ती और अपर्याप्त प्रयास का ऊपर का हवाला दिया गया था। ऐसा प्रयास बाइबल के आश्चर्यकर्मों और प्राकृतिक नियमों की दूरी को मिटाने के लिए है। परन्तु, बहुत से अविश्वासी लोग बाइबल की बातों को झूठा ही मानते हैं। उनका दावा होता है कि ''जब आश्चर्यकर्म आरम्भ होते हैं, तो इतिहास खत्म

हो जाता है।'' वे आश्चर्यकर्म होने की असम्भावना की कल्पना करते हैं। आश्चर्यकर्मों की वास्तविकता के विरुद्ध वे तीन आपत्तियां उठाते हैं: (1) ''गवाही से आश्चर्यकर्म प्रमाणित नहीं हो सकता,'' (2) ''प्रकृति में एकता के वैज्ञानिक नियम के कारण आश्चर्यकर्म असम्भव है,'' और (3) ''मूर्तिपूजकों और अन्य लोगों द्वारा किए जाने वाले आश्चर्यकर्मों के दावे बाइबल के दावों की तरह ही मान्य हैं।''

''गवाही आश्चर्यकर्म का प्रमाण नहीं हो सकता''

स्कॉटलैण्ड के नास्तिक डेविड ह्यूम (1711–1776) ने दावा किया था कि गवाही चाहे कितनी भी प्रशंसा योग्य क्यों न हो, वह आश्चर्यकर्म को प्रमाणित नहीं कर सकती। आश्चर्यकर्मों को वह तर्क से अधिक उपहास का विषय मानता था।[1] परन्तु ह्यूम के ऐसा फैसला लेने की बात की भरोसे योग्य गवाही के महत्व पर संसार के विचार में विरोध किया जाता है। संसार की न्याय प्रणाली गवाहों की बात से मिले तथ्यों के आधार पर बनती है। इसके अलावा, जॉर्ज वाशिंगटन के ऐतिहासिक लेखों की विश्वसनीयता गवाही के आधार पर ही है।

विश्वसनीय गवाही की यथार्थता प्रकृति की स्थिरता की तरह ही एक प्राकृतिक नियम है। मनुष्य के अनुभव से पुष्टि पाकर, प्रकृति की स्थिरता को एक प्राकृतिक नियम के रूप में स्वीकारा जाता है। बिल्कुल इसी प्रकार, मनुष्य के अनुभव की पुष्टि से विश्वसनीय गवाही की यथार्थता को प्राकृतिक नियम के रूप में स्वीकारा जा चुका है। आश्चर्यकर्मों को नकारने के लिए तर्क के रूप में प्रकृति की स्थिरता के नियम का सहारा लेने वाला, मनुष्य की गवाही की विश्वसनीयता के नियम को ठुकरा रहा है। वह एक प्राकृतिक नियम के विरुद्ध दूसरा प्राकृतिक नियम बना रहा है। उसे दूसरे आश्चर्यकर्म से बचने के लिए एक (प्राकृतिक नियम के एक उल्लंघन) को मानना होगा।

इसके अतिरिक्त, अपने व्यक्तिगत अनुभव की संकीर्णता को छोड़कर, प्रकृति की स्थिरता में ह्यूम के विश्वास को गवाही का समर्थन था। ''दूसरे युगों और देशों'' में होने वाली बातों के बारे में उसे गवाही से ही पता चला था। इस प्रकार, उसने गवाही को खत्म करने के लिए गवाही को स्वीकार किया। ह्यूम को कभी-कभी प्रमाण स्थापित करने के लिए मानवीय गवाही की अपर्याप्तता पर अपने भ्रम का अहसास होता था। इसे उसने इस प्रकार स्वीकार किया: ''मैं कहता हूं, कि ... आश्चर्यकर्म या प्रकृति की सामान्य चाल का उल्लंघन सम्भव हो सकता है, ऐसा उल्लंघन जिसके प्रमाण को मनुष्य की गवाही से मानना ही पड़े।''[2] उसने एक उदाहरण भी दिया जिसे वह मानने के लिए तैयार था:

> इसलिए, मान लीजिए, सभी भाषाओं के, सभी लेखक सहमत हो जाएं, कि पहली जनवरी 1600 से पूरी पृथ्वी पर आठ दिन तक अंधेरा रहा था: मान लीजिए कि इस असाधारण घटना की परम्परा आज भी इतनी मजबूत और लोगों में पाई जाती है: कि सभी यात्री, जो विदेशों से लौटते हैं, उस परम्परा की जानकारी के बिना उसमें परिवर्तन या विरोध लिए, हमें दे: *''यह स्पष्ट है, कि हमारे आज के*

दार्शनिकों को इस पर संदेह करने के बजाय इसे सच मानना अवश्य है ... ।''[3]

यह मान लेने के बाद कि आश्चर्यकर्म को सही ठहराने की मानवीय गवाही का उसे अहसास था, उसने इस अपवाद से धर्म के विरुद्ध अपनी पूर्वधारणा दिखाई:

> परन्तु यदि इस चमत्कार को धर्म के किसी नये ढंग का नाम दिया जाए ... तो यह परिस्थिति ही सभी समझदार लोगों के लिए न केवल इस तथ्य को नकारने बल्कि इसे बिना और जांच पड़ताल के नकारने के लिए और धोखे का पूरा प्रमाण पर्याप्त होगी ।[4]

गवाही से किसी गैर धार्मिक चमत्कार को प्रमाणित करने के ह्यूम के उद्धरण के अलावा, उसने यह भी माना कि यदि किसी चमत्कार के बारे में बताया जाता है तो उसके झूठ के अधिक चमत्कारी होने पर उसे मान लेना चाहिए: उसने कहा था, ''जब तक कोई गवाही ऐसी न हो कि इसका झूठ वास्तविकता से अधिक चमत्कारी न हो, जिससे यह स्थापित होता है, तब तक चमत्कार होने को मनवाने के लिए कोई गवाही पर्याप्त नहीं है... ।''[5] ह्यूम यह विचार करने में असफल रहा था कि यदि बाइबल के आश्चर्यकर्म झूठे हैं तो बाइबल, इसके लेखक, और सच्चाई के लिए इसका प्रभाव मनुष्यों के प्रश्नों को अनुत्तरित और उत्तर न देने के योग्य छोड़ देते हैं। हर बात की सच्चाई के लिए बाइबल के इतने प्रभाव से पता चलता है कि इसके आश्चर्यकर्म सत्य हैं, परन्तु यदि आश्चर्यकर्म कल्पित हैं तो इसका कोई प्रभाव नहीं हो सकता है।

मसीहियत के चर्चित आश्चर्यकर्म किसी बन्द कमरे के कोने में नहीं बल्कि लोगों के बीच हुए थे। इसके अलावा, उनमें बहुत विभिन्नता थी, और वे सत्तर वर्षों तक होते रहे थे। यह मानना कि वे झूठे थे और हज़ारों लोगों को धोखे में रखा गया था, जिनमें से अधिकतर ने अपने विश्वास के लिए प्राण भी दे दिए थे, आश्चर्यकर्मों की वास्तविकता से अधिक कठिनाई से मानने योग्य है। उदाहरण के लिए, रोटियां और मछलियां बढ़ाने का आश्चर्यकर्म हज़ारों लोगों ने देखा था। या तो प्रेरितों ने भोजन कम देखा, इसके बढ़ने को देखा, इसे बांटा और उससे अधिक उठाया जितना पहले उनके पास था, या उन्होंने कुछ गोलमाल किया था। वहां किसी को धोखा देना सम्भव नहीं था। निश्चय ही, समुद्र के किनारे और रोटियां व मछलियां लेने आए लोगों ने यह नहीं सोचा था कि भोजन का बढ़ना धोखा है।

आश्चर्यकर्मों की वास्तविकता को स्वीकार करने से कठिन है, यह कल्पना करना कि यीशु संसार का सबसे बड़ा धोखेबाज और संसार का सबसे क्रूर व्यक्ति (झूठ-मूठ आराम और उद्धार देने की पेशकश करने वाला) था। यह कल्पना करना कि वह एक अत्याचारी और परपीड़क था (लोगों की आशाओं पर व्यंग्य करने वाला) या वह संसार का सबसे बड़ा धोखा खाया हुआ आदमी था, किसी भी आश्चर्यकर्म से अधिक अविश्वसनीय है।

ह्यूम के तर्क में यह बात की जाती है कि आश्चर्यकर्म असम्भव है और इसलिए कोई भी गवाही किसी ऐसी बात को जो हो ही नहीं सकती, प्रामाणिक नहीं बनाती। परन्तु, ऐसी

मान्यता केवल नास्तिक या देववादी व्यक्ति ही करता है, इसलिए ह्यूम का तर्क केवल नास्तिक या किसी देववादी को ही कायल कर सकता है।

लगता है कि ह्यूम की सोच को नकारात्मक, निराशावादी व्यवहार ने प्रभावित करके उसे पक्का संदेही बना दिया था। इस प्रकार की सोच का अस्पष्ट परिणाम उसकी निराशा, उलझन और आशाविहीन होने में दिखाई देता है। ''उस तत्व ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा'' (कुलुस्सियों 2:8) उसके तर्क ने उसका नाश किया। ह्यूम उन लोगों में से था जिन्होंने अपनी आशिषों के लिए कोई धन्यवाद न दिया, बल्कि, ''व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उनका निर्बुद्धि मन अंधेरा हो गया'' (रोमियों 1:21)। वह अपने आप से ही धोखा खाया हुआ अपनी ही चालाकी का शिकार था जिसने निराशा बो कर इसका फल काटा था।

आश्चर्यकर्मों के प्रमाण के रूप में मनुष्यों की गवाही को ठुकराना तर्कहीन तथा जबरदस्ती है।

''प्रकृति में एकता का वैज्ञानिक नियम आश्चर्यकर्म को असम्भव बना देता है''

आश्चर्यकर्मों का विरोध करने के लिए दूसरा तर्क इस्तेमाल किया जाता है कि प्रकृति में एकता का वैज्ञानिक नियम अर्थात, यह कि प्रकृति सदा एक जैसा व्यवहार ही करती है, आश्चर्यकर्मों के लिए कोई स्थान नहीं रहने देता। यह तर्क दिया जाता है कि अधिकतर लोगों द्वारा अनुभव की प्रत्येक बात का प्राकृतिक, तार्किक कारण होता है, इसलिए बिना किसी सामान्य, प्राकृतिक कारण के किसी अनुमानित अनुभव की बात सम्भव नहीं है।

परन्तु, यह तथ्य कि किसी व्यक्ति का पूरा अनुभव प्राकृतिक है और उसके बारे में बताया जा सकता है, का अर्थ यह नहीं है कि सब लोगों का अनुभव ऐसा ही होगा। एक वैज्ञानिक आज की घटनाओं का वर्णात्मक कार्यों के रूप में सही-सही अवलोकन कर सकता है; इस अवलोकन के आधार पर, वह निष्कर्ष निकाल सकता है (चाहे गलत ही हो) कि संसार में कभी कोई अलौकिक घटना नहीं घटी थी। इस प्रकार की धारणा बनाकर, वह अपने उचित दायरे से बाहर निकल गया है। वह यह तो सही-सही प्रमाणित कर सकता है कि अब क्या हो रहा है, परन्तु पिछले समय में क्या हुआ उसके बारे में जानने का उसके पास कोई साधन नहीं है। उसका निष्कर्ष अवैज्ञानिक है। उसने उन क्षेत्रों में जाने का उल्लंघन किया है जो वैज्ञानिक ज्ञान तथा सामान के लिए बाहरी हैं। वह भौतिक को छोड़कर अपने आपको अभौतिक अर्थात ऐसे क्षेत्र में ले गया है, जो कि प्रमाणित न किए जाने वाले अनुमान के दायरे में है। प्रकृति में अब आश्यर्चकर्म कम होने से इतिहास में उनकी वास्तविकता को नकारा नहीं जा सकता। उस विषय पर प्राकृतिक विज्ञान नहीं बल्कि केवल ऐतिहासिक विज्ञान ही कुछ बता सकता है। विज्ञान का आकाश तथा समय दोनों में ही बहुत सीमित अनुभव हैं, इसलिए विज्ञान के लिए उस स्थान और समय की बात करना जहां वह गया ही न हो, शोभा नहीं देता।

यदि वैज्ञानिक यह आदेश जारी करके कि कभी कोई आश्चर्यकर्म हुआ ही नहीं अपनी सीमाओं को लांघ नहीं रहे थे, तो भी एकता की उनकी शिक्षा उन्हें जीवन के आरम्भ के लिए

और जीवन के तथाकथित विकास को व्याख्या के बिना ही छोड़ देती है। यदि प्रकृति का एकरूपता का सिद्धांत आश्चर्यकर्मों की मनाही करता है, तो यह तत्व के आरम्भ, जीवन के आरम्भ और जीवन के विकास की भी मनाही करता है। मानवाकार बन्दर के दिमाग का मनुष्य के दिमाग में परिवर्तन निश्चय ही बाइबल के किसी आश्चर्यकर्म जैसा ही है।

जैसे गवाही के अभाव वाला तर्क कायल नहीं कर सकता, वैसे ही प्रकृति की वर्तमान एकरूपता के किसी बीते समय में हुए आश्चर्यकर्म को निकालने की बात का तर्क अधूरा है।

''मूर्तिपूजकों और अन्य लोगों द्वारा किए जाने वाले आश्चर्यकर्मों के दावे बाइबल के दावों की तरह ही मान्य हैं''

बाइबल के आश्चर्यकर्मों की वास्तविकता को समाप्त करने के लिए तीसरा प्रमुख तर्क उन्हें मूर्तिपूजकों और अन्य धर्मावलंबियों के तथाकथित चमत्कारों के साथ मिलाना है। परन्तु, जैसे जाली नोटों की त्रुटियों से असली नोटों का पता चल जाता है, वैसे ही नकली और असली आश्चर्यकर्मों की तुलना की जा सकती है। इनके अन्तरों को देखकर, असली आश्चर्यकर्मों और झूठे चमत्कारों का तुरन्त पता चल सकता है।

आश्चर्यकर्मों का सम्बन्ध पहली शताब्दी के एक जादूगर अपोलोनियुस से जोड़ा जाता है; परन्तु प्रामाणिकता की जांच करने पर, पता चलता है कि इसमें कमियां हैं। एकमात्र प्रमाण जो इस समय मौजूद है वह पहली शताब्दी के बजाय तीसरी शताब्दी से है और वह भी चश्मदीद गवाहों के बजाय दूसरे लोगों से मिलता है।

यदि यीशु को नीचा दिखाने के लिए अपोलोनियुस की दंतकथाओं के इस्तेमाल का कोई भी कारण होता तो आलोचक उनका इस्तेमाल अवश्य करते। डेविड ह्यूम ने समर्थन के बिना आश्चर्यकर्मों की तीन बातों का इस्तेमाल अवश्य किया परन्तु इन रिपोर्टों को किसी ने उसके जीवन से प्रमाणित नहीं किया था। यीशु के कामों तथा शिक्षाओं की सच्चाई के पक्ष में, चश्मदीद गवाहों ने अपने प्राण देकर गवाही दी।

अन्य तथाकथित आश्चर्यकर्मों का सम्बन्ध इग्नेशियस लोयोला और फ्रांसिस ज़ेवियर से जोड़ा जाता है, परन्तु उनका सम्बन्ध उन लोगों के कई सालों बाद मीलों दूर हुई बातों से जोड़ा जाता है। यीशु से जुड़े आश्चर्यकर्मों का उसी पीढ़ी में हुई बातों से सम्बन्ध जोड़ा जाता है जिसमें यीशु रहा और उन लोगों के द्वारा जोड़ा जाता है जिन्होंने अपनी आंखों से उसके द्वारा किए सामर्थ के काम देखे थे।

बाइबल के बाहर के आश्चर्यकर्मों की पुष्टि न केवल त्रुटिपूर्ण है, बल्कि तथाकथित आश्चर्यकर्म उस आत्मा से अलग हैं जिसका सम्बन्ध बाइबल से है। यीशु के आश्चर्यकर्म मुख्यत: उसको परमेश्वर का पुत्र प्रमाणित करने के लिए थे, परन्तु वे लाभदायक और लोगों की भलाई के लिए थे। यीशु ने भूखों को भोजन कराया, बीमारों को चंगा किया, और दुखी लोगों को सांत्वना दी थी। बाइबल के बाहर के आश्चर्यकर्मों के दावों में एक रूखा अन्तर शमौन टोने, पत्थर के कुत्तों को भौंकने और मूर्तियों को बोलने लगा देने के करतबों में देखा

जाता है। यह भी सुना कि यह टोना अपने आपको बकरी बना लेता था और जलते हुए कोयलों पर लेटता था।

बाइबल के बाहर के तथाकथित चमत्कारों में न केवल नीच आत्मा ही स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, बल्कि उनका उद्देश्य भी अलग था। बाइबल के आश्चर्यकर्मों का मुख्य उद्देश्य कुछ प्रमाणित करना था, जबकि बाइबल से बाहर के चमत्कारों का दावा उन लोगों में किया जाता था जो पहले ही उनके धर्म को मानते थे। ये चमत्कार उनके धर्म के प्रमाण नहीं बल्कि उससे जुड़े हुए थे।

बाइबल के आश्चर्यकर्मों की वास्तविकता की मुख्य आपत्तियों में वज़न कम है और ये मानने योग्य नहीं लगतीं।

बाइबल के आश्चर्यकर्मों को मानने का आधार

बाइबल के आश्चर्यकर्मों की वास्तविकता के दावों को कम से कम चार सच्चाइयों का समर्थन प्राप्त है: (1) आश्चर्यकर्मों से सम्बन्धित पुस्तक पूरी तरह से विश्वसनीय है, (2) बाइबल के आश्चर्यकर्मों का नकली होने का कोई संकेत नहीं है, (3) यीशु के समकालीन शत्रुओं और बाद के नास्तिकों ने उसके आश्चर्यकर्मों पर संदेह नहीं किया था, और (4) यीशु के जीवन के बारे में बताने के लिए आश्चर्यकर्म आवश्यक हैं।

आश्चर्यकर्मों का सम्बन्ध बताने वाली पुस्तक की विश्वसनीयता

प्रमाण की बहुत सी रेखाएं (इतिहास, पुरातत्व, आकस्मिक अप्रत्यक्ष संकेत, लेखकों के चरित्र, और लेखों के प्रभाव) लगभग पूरे संसार में माने जाने वाले निर्णय कि बाइबल संसार की सबसे अधिक विश्वसनीय पुस्तक है, का वर्णन करने के लिए पास-पास आ जाती हैं। यदि बाइबल ऐसी पुस्तक होती जिस पर भरोसा न किया जा सकता, तो यह इसकी अलौकिक घटनाओं की कहानियों को नकारने का अच्छा कारण होना था। इसके विपरीत यदि निर्विवाद रूप से बाइबल अब तक की लिखी गई सब पुस्तकों में से भरोसे योग्य है, तो आश्चर्यकर्मों की इसकी कहानियों को स्वीकार करने का अच्छा कारण है। यदि बाइबल की विश्वसनीयता को एक तरफ नहीं रखा जा सकता, तो तर्कसंगत रूप में इसके आश्चर्यकर्मों को भी नकारा नहीं जा सकता। इसलिए बाइबल पर भरोसा करने की बात ही, इससे जुड़े आश्चर्यकर्मों की वास्तविकता का सशक्त प्रमाण है।

बाइबल के आश्चर्यकर्मों का नकली होने का कोई संकेत नहीं है

बाइबल के आश्चर्यकर्मों की ऐतिहासिकता को स्वीकार करने का एक दूसरा सशक्त कारण इनका नकली न होना है। धोखेबाज व्यक्ति प्रसिद्धि पाने के लिए कुछ भी कर लेता है, परन्तु यीशु द्वारा लोगों को कभी-कभी अपने कामों के बारे में कुछ भी न बताना अजीब लगता है। स्पष्टत: ऐसा उसने नासमझ लोगों की भीड़ से बचने के लिए किया था जो उसके परमेश्वर होने को नहीं, बल्कि केवल एक आश्चर्यकर्म करने वाले को देखते थे। प्रसिद्धि

पाने से मना करने का उसका जो भी कारण हो, यह ऐसा कारण है जिसे कोई धोखा देने वाला नहीं कर सकता।

इसके अलावा, एक धोखेबाज़ अपने चमत्कारों का महत्व दिखाने के लिए कुछ भी कर सकता है। इस दीन नासरी बढ़ई ने, आश्चर्यकर्मों के महत्व को पूरी तरह जानते हुए भी कभी-कभी उनको अहमियत न दी। क्योंकि जिन लोगों ने उसके परमेश्वर होने को न मानने की ठान रखी थी, उनके लिए आश्चर्यकर्म तो व्यर्थ का प्रयास होने थे। उसने आश्चर्यकर्मों को अपने आप में मंज़िल नहीं बनने दिया। आश्चर्य के काम करने की अपनी योग्यता को कोई धोखेबाज़ इतना कम नहीं कर सकता है।

यह तथ्य कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कोई आश्चर्यकर्म नहीं कर सका, दिखाता है कि सुसमाचार के लेखक मन-गढ़ंत बातों को लिखने के लिए उतावले नहीं थे। इसके अलावा, यह तथ्य कि उन्होंने यीशु की सेवकाई से पहले उसके किसी आश्चर्यकर्म का उल्लेख नहीं किया, संकेत देता है कि वे इतिहास लिख रहे थे, कहानियां नहीं। फिर, मुर्दों को ज़िंदा करने की केवल कुछ ही घटनाओं का लिखा जाना पुन: संकेत देता है कि वे लेखक कल्पनाप्रिय व्यक्ति नहीं थे। राजा हेरोदेस के सामने कोई आश्चर्यकर्म करने से यीशु का इन्कार शमौन जादूगर से बिल्कुल विपरीत है।

सुसमाचार के वृत्तांतों की बातें नकली न होकर, बिल्कुल सत्य हैं। फ्रांसीसी तर्कशील जोसेफ रेनान ने कहा था कि सुसमाचार के वृत्तांतों में प्रामाणिकता के सभी आंतरिक चिह्न हैं, और बाहरी गवाही मुख्य तथ्यों की पुष्टि करती है।

यीशु के शत्रुओं ने उसके आश्चर्यकर्मों पर संदेह नहीं किया

सुसमाचार के आश्चर्यकर्मों की वास्तविकता का तीसरा सशक्त प्रमाण यह तथ्य है कि यीशु के समकालीन शत्रुओं और बाद के नास्तिकों ने उसके आश्चर्यकर्मों का इन्कार नहीं किया था। उनमें से अधिकतर यीशु के परमेश्वर होने पर विश्वास नहीं करते थे, परन्तु उसके आश्चर्यकर्मों पर प्रश्न उठाने वाले किसी व्यक्ति का उल्लेख नहीं मिलता है।

फरीसी यीशु के लाज़र को कब्र से जिलाने और अन्य आश्चर्यकर्म करने की वास्तविकता को स्वीकार करते हैं। उन्होंने कहा था, ''हम करते क्या हैं? यह मनुष्य तो बहुत चिह्न दिखाता है। यदि हम उसे यों ही छोड़ दें, तो सब उस पर विश्वास ले आएंगे और रोमी आकर हमारी जगह और जाति दोनों पर अधिकार कर लेंगे'' (यूहन्ना 11:47, 48)। यदि उन्हें कोई संदेह होता, तो उन्हें केवल लाज़र के घर एक या दो मील तक ही जाने की आवश्यकता थी। यह इन्कार करने के बजाय कि लाज़र जी उठा है उन्होंने लाज़र की हत्या करने की सलाह लेकर प्रमाण ही मिटा डालना चाहा।

राजा हेरोदेस अन्तिपास ने न केवल विश्वास किया कि यीशु में आश्चर्यकर्म करने की शक्ति थी (मत्ती 14:2), बल्कि उसने उसके आश्चर्यकर्मों को स्वयं देखने की इच्छा भी व्यक्त की (लूका 23:8)। यहूदा इस्करयोती ने गवाही दी कि यीशु धोखेबाज नहीं था (मत्ती 27:3, 4)। जब यीशु पर मुकदमा चल रहा था, तो उसके विरोधियों ने उसे दोषी

ठहराने के लिए हर तरीका अपनाया। उन्होंने बहुत से झूठे गवाह प्रस्तुत किए (मत्ती 26:60; मरकुस 14:55, 56), परन्तु उन्हें यह शपथ खाने वाला कोई नहीं मिला कि यीशु के आश्चर्यकर्म वास्तविक नहीं थे।

पिन्तेकुस्त के दिन, पतरस ने हज़ारों यहूदियों से बात की, जिनमें से बहुतों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था। बिना विवाद के, उसने ऐलान किया कि यीशु ने ''सामर्थ के काम और आश्चर्य के काम और चिह्नों से जो प्रगट हैं, ... तुम्हारे बीच ... दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते हो'' (प्रेरितों 2:22)। असहाय लंगड़े आदमी को चंगा करने के सम्बन्ध में, मसीहियत का विरोध करने वालों ने यह कहते हुए माना ''कि इनके द्वारा एक प्रसिद्ध चिह्न दिखाया गया है; और हम उसका इन्कार नहीं कर सकते'' (प्रेरितों 4:16)। शमौन नाम का जादूगर जो झूठ-मूठ के चमत्कार करता था फिलिप्पुस के हाथों ''चिह्न और बड़े बड़े सामर्थ के काम होते देखकर चकित होता था'' (प्रेरितों 8:13)।

न केवल यीशु के समकालीन शत्रु ही उसके आश्चर्यकर्मों की वास्तविकता को स्वीकार करते थे, बल्कि बाद के अविश्वासी भी उन्हें मानते थे। तालमुड में यहूदी रब्बियों [धार्मिक गुरुओं] के लेखों में यीशु के आश्चर्यकर्मों को जादू, या ''यहोवा के सम्माननीय नाम की शक्ति'' से मानकर स्वीकार किया गया है।

अन्यजातियों के अविश्वासी भी, चाहे मसीहियत में दोष ढूंढ़ते थे, परन्तु उन्होंने भी सुसमाचार के आश्चर्यकर्मों की वास्तविकता पर आक्रमण नहीं किया। दूसरी शताब्दी में, सैल्सस ने यीशु के धर्म के विरोध में लिखा, परन्तु उसने कभी भी उसके आश्चर्यकर्मों पर कोई प्रश्न नहीं उठाया था। उसने उन्हें जादू का नाम दिया जिसे वह कहता था कि मसीह ने मिसर से सीखा था। 270 ई. के लगभग, एक प्रबल विरोधी, पोरफायरी ने मसीहियत के विनाश का प्रयास किया था। उसके लेख नये नियम की बातों से मिलते-जुलते थे, परन्तु उसने आश्चर्यकर्मों का इन्कार नहीं किया था। 303 ईस्वी में, बितुनिया के राज्यपाल, हियरोक्लस ने नये नियम में आन्तरिक दोषों और विरोधों को ढूंढ़ा। इसके परिणामस्वरूप लिखी गई उसकी पुस्तक में किसी भी आश्चर्यकर्म की वास्तविकता को तुच्छ नहीं समझा गया। सम्राट जूलियन (धर्मत्याग करने वाला जूलियन) ने मसीहियत को उखाड़ने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी थी। सन 361 में उसने भी अपने लेखों में यीशु के धर्म पर आक्रमण किया था। उसने किसी आश्चर्यकर्म का इन्कार नहीं किया, बल्कि माना कि यीशु लोगों को चंगा करता था, दुष्टात्माओं को निकालता था और पानी पर चला था।

आरम्भिक यहूदी और अन्यजाति अविश्वासियों ने यीशु के धर्म के समर्थन में थोड़ी सी धोखेबाजी को उघाड़ने में अतिआनन्दित होना था। ये आलोचक न चाहते हुए और उन आश्चर्यकर्मों की गवाही के कारण उसके आश्चर्यकर्मों के विरोध में कुछ न कह सके अर्थात वे चुप हैं।

यीशु के जीवन के बारे में बताने के लिए आश्चर्यकर्म आवश्यक हैं

बाइबल के आश्चर्यकर्मों की सत्यता को मानने का चौथा सशक्त कारण यह तथ्य है

कि यीशु का जीवन पूरी तरह से प्राकृतिक मान्यताओं पर आधारित है। कुछ लोगों ने यीशु के जीवन में प्राकृतिक आश्चर्यकर्मों को अलग करने की कोशिश की है, परन्तु उन्हें कोई सफलता नहीं मिली। दोनों एक दूसरे के साथ मिलकर पूर्ण बनते हैं। एक के बिना दूसरे का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

यीशु के जीवन का कुछ भाग आश्चर्यकर्म करने की शक्ति पर उसके विरोधियों की प्रतिक्रिया थी। यदि उसने अशुद्ध आत्माओं को नहीं निकाला तो उनका उसके साथ इस प्रकार व्यवहार करने का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

यीशु ने एक बीमार स्त्री को हाथ से छूकर ठीक कर दिया था और फिर तुरन्त वह उसकी सेवा करने लगी थी। आश्चर्यकर्म की बात प्राकृतिक के साथ जुड़ जाती है।

लोगों की बड़ी भीड़ यीशु के पीछे रहती थी। उसके आश्चर्यकर्मों के कारण लोगों पर उसके प्रभाव की समझ आती है, परन्तु आश्चर्यकर्मों के बिना लोगों को अपनी ओर खींचने की शक्ति तो एक पहेली ही होगी, और संसार का सबसे अच्छा आदमी एक धोखेबाज़ के रूप में चित्रित हो जाएगा।

वह कोई नीम हकीम होता तो उस विश्वास का वर्णन असम्भव हो जाता, क्योंकि फिर वह धंधे के रहस्य ही उनको आगे दे सकता था। तीन साल तक उसके पीछे चलने के बाद, उनका विश्वास था कि उसके आश्चर्यकर्म वास्तविक हैं।

सारांश

सबसे बड़े आश्चर्यकर्म अर्थात यीशु मसीह के पुनरुत्थान पर विचार किए बिना बाइबल के आश्चर्यकर्मों की वैधता की कोई भी चर्चा पूरी नहीं हो सकती है। उस आश्चर्यकर्म पर अगला पाठ दिया गया है। कृपया इस पर सावधानीपूर्वक और प्रार्थनापूर्वक विचार करें।

पाद टिप्पणियां

[1]डेविड ह्यूम, *ऐन इन्क्वायरी कंसर्निंग द ह्यूमन अण्डरस्टैंडिंग, एण्ड ऐन इन्क्वायरी कंसर्निंग द प्रिंसिपल ऑफ मोरल्स,* सं. एल. ए. सेल्बी-बिग्गे (ऑक्सफोर्ड: क्लेयरडन प्रैस, 1894), 120. [2]वही, 127. [3]वही, 127-28. [4]वही 128-29. [5]वही 115-16.

सबसे बड़ा आश्चर्यकर्म: यीशु का पुनरुत्थान

एक दृष्टिकोण से, एक आश्चर्यकर्म दूसरे आश्चर्यकर्म की तरह ही कठिन है और एक आश्चर्यकर्म दूसरे की तरह ही आसान भी है। एक अन्य दृष्टिकोण से, बाइबल में दर्ज किसी भी आश्चर्यकर्म का यीशु की देह के पुनरुत्थान से बड़ा परिणाम नहीं है जिसमें मृत्यु का उस पर कोई अधिकार नहीं रहा। यदि यीशु के मुर्दों में से जी उठने के आश्चर्यकर्म को प्रमाणित किया जा सकता है, तो निश्चय ही बाइबल के दूसरे सभी आश्चर्यकर्म विश्वसनीय और सच्चे हैं। इसलिए, यीशु के पुनरुत्थान के परिणाम इतने महत्वपूर्ण और दूर तक असर करने वाले हैं कि इस पुनरुत्थान के प्रमाणित या अप्रमाणित होने से बाइबल के सभी दूसरे आश्चर्यकर्मों को प्रमाणित या अप्रमाणित किया जा सकता है। इसलिए, यीशु के गाड़े जाने के तीसरे दिन क्या हुआ इसका विशेष अध्ययन साधारण रूप से बाइबल के आश्चर्यकर्मों को प्रमाणित या अप्रमाणित करने का सरल और सीधा ढंग है।

यदि वह मुर्दों में से जी नहीं उठा था

एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि यदि यीशु मुर्दों में से जी नहीं उठा था तो उसके शरीर के साथ छह बातें हुई हो सकती हैं।

(1) *यीशु के चेले उसकी देह को चुराकर ले गए।* यीशु के चेलों द्वारा उसकी देह को चुराने की बात अविश्वासियों की सबसे पहली थ्योरी थी। यह थ्योरी यहूदियों के महायाजकों ने कब्र की रखवाली करने वाले सिपाहियों को सिखाई थी। (देखिए मत्ती 28:1-15.) इस थ्योरी में कल्पना की जाती है कि सभी सिपाही ड्यूटी के समय सो गए थे, परन्तु वे बता सकते थे कि उनके सोते समय क्या हुआ था। इसके अलावा, इसका अर्थ यह है कि छोटी-मोटी चोरी करने वाले चेले यीशु का मखमल का कफ़न उतारकर एक ओर रखकर और उसके सिर का कपड़ा उतारकर इसे लपेटकर उसके पास खाली कब्र में रख गए थे। यह थ्योरी यीशु के चेलों को जो लोगों से सच्चाई भरा जीवन बिताने का आग्रह करते थे, धोखेबाज़ बनाती है।

(2) *बेहोश होने की थ्योरी।* एक और थ्योरी में कहा जाता है कि यीशु वास्तव में मरा नहीं बल्कि मूर्छित हो गया था। फिर, होश में आने पर उसने लोगों को बताया कि वह मुर्दों में से जी उठा है। इस थ्योरी में कल्पना की जाती है कि यीशु क्रूस पर सीधे लटके हुए छह घण्टे की कठिन परीक्षा, पसली में सिपाही द्वारा भाला मारने और मोहरबन्द कब्र में तीन दिन तक रहने के बाद भी जीवित रहा था। इस थ्योरी में दावा किया जाता है कि घायल, लहू बहते हुए, बिना कुछ खाए पीए यीशु तीन दिनों के बाद होश में आया, उसने अपना कफ़न और सिर की पट्टी उतार दी, ''वह बहुत ही बड़ा'' (मरकुस 16:4) पत्थर हटा दिया, रखवालों से बच निकला, और इम्माऊस तक पन्द्रह मील जाकर लौट आया।

वास्तव में, पीलातुस ने सूबेदार द्वारा यीशु की मृत्यु को प्रमाणित किए बिना उसकी लाश नहीं दी थी। इसके अलावा, यहूदी लोग मानते थे कि यीशु सचमुच मर गया था।

(3) *यीशु के शत्रुओं द्वारा उसकी लाश चुरा ली गई।* तीसरी थ्योरी में दावा किया जाता है कि यीशु की लाश को उसके शत्रु चुरा ले गए थे। यदि यह सच होता, तो मसीहियत निश्चय ही अधिक देर तक न रहती। यदि यीशु के शत्रु प्रमाण के रूप में कि यीशु तो मरा हुआ है, केवल उसकी लाश ही दिखा देते तो एक नये धर्म को बड़ा धक्का लगना था।

(4) *भ्रम।* बहुत से अविश्वासियों द्वारा मानी जाने वाली, चौथी थ्योरी यह है कि यीशु के चेलों को भ्रम था अर्थात वे यीशु को फिर से देखने की इतनी चाह रखते थे कि उन्हें लगता था कि उन्होंने उसे देख लिया है। इसके विपरीत, उसके चेलों को उसे दोबारा देने की आशा नहीं थी। उन्होंने तो पहली बार सुनकर पुनरुत्थान की कहानी पर विश्वास भी नहीं किया था। वास्तव में, वे पहले संदेहवादी थे, परन्तु वे अपने संदेह में निष्कपट थे। संदेह में होने वाला व्यक्ति भ्रम का शिकार नहीं हो सकता। फिर, यदि चेले इस प्रकार की किसी कल्पना के शिकार थे, तो कई तथ्य हैं जिनकी व्याख्या नहीं की गई है। भ्रम की थ्योरी में खाली कब्र का कारण शामिल नहीं किया गया। इसमें झील के किनारे रोटी और मछली खाने या पांच सौ लोगों के उसी भ्रम की बात की व्याख्या नहीं की गई। इसके अलावा, इसमें यह विचार नहीं किया जाता कि दो महीनों से कम समय में तीन हज़ार लोग कैसे या क्यों विश्वासी बन गए, यीशु का दर्शन देना बन्द होने के बावजूद उसके पुनरुत्थान में विश्वास बना रहा।

(5) *मानसिक पुनरुत्थान।* पांचवीं थ्योरी में कहा जाता है कि यीशु की देह तो मृत ही रही, परन्तु उसके चेलों ने यीशु को मन में रखा और उसकी शिक्षाओं के अनुसार जीवन बिताते रहे, इसलिए उनके लिए यीशु अभी भी जीवित था। इस प्रकार वे लोगों के मनों में यीशु के जीवित होने की बात कह सकते थे। अन्य शब्दों में, इस थ्योरी के अनुसार पुनरुत्थान पूरी तरह से उनके मन का विचार था। परन्तु, उक्त थ्योरी यह समझाने में असफल रहती है कि कब्र खाली कैसे हुई। इसके अलावा, यह निराश चेलों को यह प्रमाण देते हुए कि उन्होंने जी उठे यीशु को पकड़ा है, दृढ़ विश्वास वाले मसीही शहीदों में बदलने की बात समझाने में असफल रहती है।

(6) *किसी आत्मा का वस्तुनिष्ठ दर्शन।* मानसिक पुनरुत्थान का एक रूपान्तरण यह है कि चेलों ने वास्तव में यीशु के तेजस्वी आत्मा को देखा था, यद्यपि उसकी देह जीवित नहीं हुई थी। प्रस्तुत थ्योरी यह व्याख्या करने की आवश्यकता के कारण अपनाई गई है कि विश्वास न करने वाले चेले अचानक पुनरुत्थान के दृढ़ विश्वासियों के रूप में कैसे बदल गए।

परन्तु इस थ्योरी की कमजोरी यह है कि यह एक आश्चर्यकर्म का केवल विकल्प ही है: शारीरिक पुनरुत्थान में विश्वास करना तो कठिन है, परन्तु आत्मा के दृश्यमान होने पर विश्वास करना भी उतना ही कठिन है। इसके अलावा, इस थ्योरी में यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि कब्र खाली कैसे हुई। इसके अलावा, यीशु ने अपनी देह उनके हाथों में स्वयं दी थी और उसने यह प्रमाणित करने के लिए कि वह केवल आत्मा ही नहीं था, अपने चेलों के साथ भोजन भी किया था।

यीशु के शारीरिक पुनरुत्थान के प्रमाण

प्रमाण की कम से कम आठ पंक्तियां यह निष्कर्ष निकालने के लिए अगुआई करती हैं कि यीशु की देह तीन दिनों के बाद मुर्दों में से जी उठी थी: (1) खुली कब्र, (2) खाली कब्र, (3) कफ़न, (4) लपेटा हुआ सिर का कपड़ा, (5) चश्मदीद गवाह, (6) नये नियम की विश्वसनीयता, (7) मसीहियत का अस्तित्व, और (8) चिह्न।

(1) *खुली कब्र।* कब्र पर मोहर लगे इतने बड़े पत्थर का कब्र से हटना और कब्र का खाली होना एक ऐसा प्रश्न है जिस पर विचार किया जाना आवश्यक है। निश्चय ही रोमी लोगों ने कब्र नहीं खोली थी, क्योंकि उन्हें यह देखने के लिए ही तैनात किया गया था कि कोई कब्र न खोल दे। निश्चय ही यहूदियों ने भी कब्र नहीं खोली थी क्योंकि उन्हीं ने तो बिनती की थी कि कब्र पर पहरा बिठाया जाए ताकि उसकी लाश को कोई चुराकर न ले जा सके। निश्चय ही चेलों ने भी कब्र नहीं खोली थी, क्योंकि वे भी सिपाहियों को डराकर उसे नहीं खुलवा सकते थे, न ही वे इस स्थिति में थे कि स्वयं खोल लें। परन्तु, कैसे भी हो कब्र तो खुली थी। यदि पत्थर को स्वर्गदूत ने नहीं हटाया था, जैसे मत्ती ने लिखा है, तो किसने हटाया।

(2) *खाली कब्र।* न केवल उस बड़े पत्थर के हटने पर विचार किया जाना चाहिए बल्कि कब्र खाली कैसे हुई यह भी एक महत्वपूर्ण बात है। किसी रोमी सिपाही द्वारा लाश को वहां से हटाने की कल्पना नहीं की जा सकती। यहूदी लोग यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि उसकी लाश कब्र में ही है। यीशु के चेले जिन्होंने लाश कब्र में रखी थी, उसे वहां पर रहने देना चाहते थे और यदि वे उसकी लाश को वहां से हटाना भी चाहते, तो वे सिपाहियों से नज़र बचाकर ऐसा नहीं कर सकते थे। यदि यीशु अपनी ईश्वरीय सामर्थ से जी उठकर कब्र से बाहर नहीं आया तो कब्र के खाली होने की बात अनुत्तरित ही रहती है।

(3) *कफ़न।* किसी धनी व्यक्ति द्वारा खरीदा गया बढ़िया मलमल का कफ़न, *पतला महीन कपड़ा* (महंगा भारतीय कपड़ा) कब्र में ही रखा गया था। यदि कब्रों को लूटने वाले उसकी देह को ले जाते, तो उन्होंने बहुमूल्य मलमल को भी ले जाना था। यदि, चोरी से चेलों ने सिपाहियों से नज़र बचाकर, उस बड़े पत्थर को लुढ़काकर लाश को चुराया होता, तो कल्पना नहीं की जा सकती कि उन्होंने यीशु के शरीर से कफ़न उतारने में समय क्यों गंवाया। यदि यीशु ने स्वयं कफ़न का कपड़ा नहीं उतारा, तो उसके कब्र में रहने का रहस्य अभी भी बरकरार है।

(4) *लपेटकर रखा हुआ सिर का कपड़ा।* वह कपड़ा जो उसके सिर से बन्धा हुआ था, अन्य कपड़ों के साथ नहीं, परन्तु खाली कब्र में एक अलग जगह लपेट कर रखा हुआ था। इसे जल्दी में फैंका नहीं गया बल्कि लपेटकर रखा गया था। जिसने भी सिर का यह कपड़ा उतारा हो वह जल्दी में नहीं था क्योंकि उसने बड़े सलीके से उसे कब्र में रखा था। कब्र के लुटेरे चेले होते या कोई और, उन्होंने सिर के इस कपड़े को उतारने में समय नहीं गंवाना था; यदि वे उतारते भी तो उन्होंने इसे जल्दी में और लापरवाही से उतारना था। यदि यीशु ने जानबूझकर इसे स्वयं नहीं उतारा, सिर के इस कपड़े को इकट्ठा नहीं किया, और इसे

नहीं रखा, तो इसके अलग रखने और लपेटकर रखने की बात अभी भी किसी को मालूम नहीं है।

(5) *चश्मदीद गवाह।* प्रेरितों ने गवाही दी कि यीशु के पुनरुत्थान के बाद उन्होंने उसके साथ खाया भी और पीया भी, उन्होंने उसे अपनी आंखों से देखा, उसे बोलते हुए सुना और उसे छुआ भी। या तो संसार के सबसे अच्छे व्यक्ति ने उन्हें दर्शन दिया था या उन्होंने कहानी बनाने के लिए एक षड्यन्त्र रचा था। यदि उन्होंने उसे छुआ और उसके घायल हाथों और पसली को देखा होता, तो उन्होंने उसे बोलते सुना था, उन्हें धोखा नहीं दिया जा सकता था। एक अन्य दृष्टिकोण से यदि उन्होंने जानबूझकर झूठ गढ़ा था, तो उनका पुरस्कार केवल उनके परेशान विवेक थे। उन्हें अपने विश्वास के कारण शारीरिक कष्ट और कठोर व्यवहार झेलना पड़ा। वे बे-घर हो गए, उनकी निन्दा की गई, सताया गया और बदनाम किया गया। सचमुच, संसार की मैल, सब बातों का कीचड़ बनकर वे मसीह की खातिर मूर्ख बन गए थे (1 कुरिन्थियों 4:10-13)। जबकि उन्होंने आग्रह किया कि वे सच बोल रहे हैं, परन्तु कुछ थ्योरियां हमें यह विश्वास दिलाना चाहती होंगी कि वे झूठे थे। प्रेरितों ने न तो धोखा खाया और न ही उन्होंने अपनी गवाही देने में कोई बेईमानी की, इसलिए एकमात्र विकल्प यह है कि उन्होंने सच बोला। चश्मदीद गवाहों के रूप में प्रेरितों की गवाही शारीरिक पुनरुत्थान का जोरदार प्रमाण है।

(6) *नये नियम की विश्वसनीयता।* लिखित दस्तावेज जिनसे नया नियम बना है मसीह के शारीरिक पुररुत्थान का प्रमाण देते हैं। ये पुस्तकें, जिन्हें इतिहास की सबसे अधिक विश्वसनीय पुस्तकें स्वीकार किया जाता है, हल्के से नहीं ली जा सकतीं। इनमें अपने आप में ही एक प्रमाण है, जिसका, शारीरिक पुनरुत्थान की कल्पित कहानी होने पर, वर्णन करना असम्भव हो जाता है। पूरी तरह से प्रमाणित सताइस पुस्तकों को संसार के सबसे बड़े छल की पंक्ति में रखने का कोई अर्थ नहीं है। यदि पुनरुत्थान ढोंग होता, तो इन सताइस पुस्तकों के इतने आत्मविश्वास से आज्ञा देने की बात, एक प्रश्न ही रह जाती।

(7) *मसीहियत का अस्तित्व।* यदि यीशु का पुनरुत्थान वास्तविक था तो मसीहियत के जन्म और विकास को आसानी से समझाया जा सकता है। परन्तु, यदि इसका अगुआ मुर्दा ही रहा तो लाखों-करोड़ों लोगों द्वारा इसे एक धर्म मानना अजीब बात है जो कि कब्र से यीशु के देह के जी उठने पर आधारित अपनी किस्म का एक ही धर्म है। उस पुनरुत्थान अर्थात जी उठने के बिना, मसीहियत अपने जन्म के साथ ही मर गई होती।

(8) *स्मरण चिह्न।* यदि यीशु का पुनरुत्थान वास्तविक था तो प्रभु भोज और प्रभु के दिन का महत्व है। यदि शारीरिक पुनरुत्थान नहीं हुआ था, तो इन स्मरण चिह्नों का कोई अर्थ नहीं है।

यदि शारीरिक पुनरुत्थान हुआ था, तो ऊपर दिए गए प्रमाणों का स्पष्ट उत्तर मिल जाता है। इन सभी तथ्यों से कोई और व्याख्या मेल नहीं खाती है। अन्य व्याख्याओं से समस्या सुलझने के बजाय अधिक उलझ जाती है, प्रश्न रह जाते हैं अनिश्चितताएं और उलझनें बढ़ती हैं। यीशु के पुनरुत्थान के विषय पर निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए इन आठ प्रमाणों को

क्रम से देखना आवश्यक है।

सारांश

यदि यीशु का पुनरुत्थान नहीं हुआ था, तो हमने छह कारण देखे हैं कि उसकी देह के साथ क्या हो सकता है। जांच से पता चलता है कि इन व्याख्याओं में प्रदर्शन की कमी है और वे संतुष्ट करने में असफल हैं। केवल एक ही निष्कर्ष कि यीशु सचमुच मुर्दों में से जी उठा था, सभी प्रमाणों के साथ मेल खाता और आशा देता है।